□□□□□□□□□□

जनसत्ता 8 अप्रैल, 2014 : भारत में चुनाव के सप्ताह भर पहले अमेरिकी राजदूत नैंसी जे पावेल का जाना,

इस तरह का समाचार बन गया, जैसे उसके पीछे नरेंद्र मोदी का रण रहे हों, या फिर देवयानी खोबरागड़े□ लेकिन अमेरिकी दूतावास की वेबसाइट देखें□ तो लगता है कि दोनों में से कोई भी नैंसी पावेल के अवकाश ग्रहण की वजह नहीं है□ '□ंबेसेडर पावेल की घोषणा' शीर्षक वाली विज्ञप्ति में साफ लिखा है, 'यह कुछ समय से योजना थी कि मई के अंत में वह सेवानिवृत्त होकर अपने घर डेलवेयर जा□ंगी□' विज्ञप्ति में यह भी टंकित है कि छियासठ साल की नैंसी पावेल, सैंतीस साल की सेवा पूरी कर चुकी हैं□ इस घोषणा के बाद तुक्के के तीर साबित करने की कहानी शुरू हो गई, जिसे विराम लगाने के लि□ अमेरिकी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया हर्फ ने स्पष्ट किया कि नैंसी पावेल पूर्व निर्धारित योजना के अनुरूप अवकाश ले रही हैं□ उनका हाल में हु□ किसी तनाव से कोई लेना-देना नहीं है□

नरेंद्र मोदी और नैंसी की हालिया मुलाकात के हवाले से बात करें तो लगता है कि अमेरिकी प्रवक्ता हर्फ ने जो कुछ कहा उसमें दम है□ बल्कि यों कहें कि तेरह फरवरी को गांधीनगर जाकर नैंसी ने भावी कूटनीति के उन बंद दरवाजों को खोला है, जिन पर अमेरिका ने 2005 से ताला लगा रखा था□ गुजरात दंगों के कारण अमेरिका ने नरेंद्र मोदी को कूटनीतिक वीजा देने से मना कर दिया था□ मार्च, 2013 से पहले जो नरेंद्र मोदी यूरोपीय संघ और ब्रिटेन की आंख की किरकिरी थे, अचानक उनकी आंखों का नूर बन ग□□ 'ब्रिक्स रिपोर्ट' के लेखक और ब्रिटिश अर्थशास्त्री जिम ओ नील को नरेंद्र भाई मोदी 'अच्छे अर्थशास्त्री' नजर आने लगे□ वित्तीय मामलों के □क अन्य विश्लेषक क्रिस वुड ने 'ग्रीड ऐंड फीयर' साप्ताहिक में टिप्पणी की कि भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी भारतीय शेयर बाजार की सबसे ब□ी उम्मीद बन कर उभरे हैं□ पश्चिम वाले कितनी तेजी से 'जैसी बही बयार, पीठ तब तैसी कीजि□' की भंगिमा में आ जाते हैं, इसका ताजा उदाहरण 'मनमोहनॉमिक्स' से 'मोदीनॉमिक्स' में हुआ उनका विचार परिवर्तन है□

मार्च 2013 में यूरोपीय संघ ने मोदी का बहिष्कार समाप्त करने की घोषणा की□ इसके साथ यह भी स्पष्ट कर दिया कि मानवाधिकार रक्षा और महिलाओं का अधिकार अलहदा मुद्दा है□ मुराद यह कि 2002 का गुजरात जनसंहार अब यूरोप वालों के लि□ नैतिकता का विषय नहीं रहा, इसलि□ मानवाधिकार और 2002 के दंगों के सवाल को उन्होंने हाशिये पर रख दिया है□ अमेरिका ने नैंसी पावेल को फरवरी में गांधीनगर भेज कर मोदी को 'कूटनीतिक क्लीनचिट' ही दी थी□ ऐसे में जो लोग सोचते हैं कि नरेंद्र मोदी के कारण नैंसी नप गए□, यह उनकी भूल है□

नैंसी पावेल के गुजरात से लौटने के बाद, अमेरिकी विदेश राज्यमंत्री निशा देसाई बिस्वाल ने नरेंद्र मोदी के संदर्भ में पूछे सवाल पर कहा कि लोकतांत्रिक रूप से चुना गया भारतीय नेता, अमेरिका का 'वेलकम पार्टनर' यानी स्वागतयोग्य सहयोगी है□ क्या गुजराती मूल की निशा देसाई बिस्वाल को अमेरिकी विदेश राज्यमंत्री और दक्षिण □शिया मामलों की प्रभारी बना□ जाने के पीछे वाइट हाउस की कोई दूरगामी योजना रही है? पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अमेरिका को अपना 'स्वाभाविक मित्र' मानते थे□ शायद इसलि□ ओबामा प्रशासन, मोदी में वाजपेयी युग का विस्तार देखता है□

यों पछिले साल जुलाई से ही इसकी भूमकि बननी आरंभ हो गई थी, जब भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सहि ने अमेरकि जाकर मोदी केलि वीजा देने की अपील की उसकेप्रकारांतर पैसठ संसद सदस्यों केहस्ताक्षर वाला पत्र ओबामा को भेजा गया, जसिमें मोदी को वीजा जारी करने का आग्रह कयिा गया था इस ववािदति पत्र पर जब बवाल मचा, तब माक्सा सांसद सीताराम येचुरी ने इनकार कयिा कि ऐसे कसिी प्रतविदन पर उन्होंने हस्ताक्षर कयिा था

कुल मलिाकर, चुनाव से पहले अमेरकि और उसकेपश्चमिी मत्रिों ने मोदी का कूटनीतकियज्ञोपवीत संस्कार कर दयिा है इसलि अब मान लेना चाहि कि अमेरकि और उसकेयूरोपीय मत्रि कूटनीतकि ऐसी वाशगि मशीन हैं, जसिसे धुल कर नक्लिने वाला बेदाग हो जाता है

लेकनि कूटनीतकि इस वाशगि मशीन में धुलने से पहले मोदी ने जापान, चीन, सगिापुर, हांगकांग, रूस, इजराइल, ब्रटिेन, स्वट्जिरलैंड, युगांडा, केन्या, आस्ट्रेलयिा की यात्राएं लगातार की थीं और गुजरात में नविेश केलि इन देशों को आमंत्रति कयिा था मोदी की इन यात्राओं केलि माहौल बनाने में प्रवासी गुजरातयिों की अहम भूमकि रही, इस पहलू को ध्यान में रखना आवश्यकहै ववदिेशी नविेशक, दंगे केदाग को कतरफरखते हु गुजरात में नविेश केलि आकर्षति हु चीन ने दस अरब डॉलर का नविेश गुजरात में करने की इच्छा जताई थी यह मोदी से मधुर संबंध केबनिा संभव नहीं था

चीनी नेतृत्व इस समय चुप होकर भारतीय राजनीतमिें तेल और तेल की धार को देख रहा है चीन से सीमा ववािद का समाधान सबसे ब। यक्षप्रश्न है अफगानस्तिान में भारत 2014 केबाद कसि भूमकि में होगा, क्रीमयिा पर समर्थन केबाद रूस से संबंध की दशिा क्या होगी, श्रीलंका से संबंध कैसे बेहतर होंगे? ये तमाम सवाल हैं

भावी सरकार केसंदर्भ में सबसे अधकि भ्रम पाकस्तिान-भारत संबंध को लेकर है पाकस्तिानी थकिटैंक का कब। खेमा (जसिमें नजम सेठी, सैयद तारकि पीरजादा शामलि हैं) महसूस करता है कि मोदी केसत्ता में आते ही तालबिान, जमात-इस्लामी और उसकेहममजिाज कठोरपंथयिों का भारत वरिोधी जेंडा और मजबूती केसाथ सामने आएगा अगर ऐसा होता है, तो कश्मीर का जनि्न और भी ब। आकार में बोतल से बाहर नक्लिेगा यह भी संभव है कि पाकस्तिान, बांग्लादेश, म्यांमा, मालदीव, नेपाल और श्रीलंका तककेकठोरपंथी मोदी की वदिेश नीतकि वरिुद्ध लामबंद हों

पाकस्तिानी सत्तातंत्र का कब। हस्सिा मानता है कि भारत में नरम और कमजोर प्रधानमंत्री होने से उसकेहति सधते हैं इसलि नवाज शरीफ भी नहीं चाहेंगे कि दक्षणि शयिा केजंगल में उनसे भी ब। शेर, दहाने केलि आ जा मगर कूटनीतमिें जो बाहर दखिता है, वही हो यह जरूरी नहीं यह भी मुमकनि है कि मोदी, अटल बहिारी वाजपेयी की तरह 'मीनार पाकस्तिान' जाएं, और शांतवािर्ता करें क्या इसकेलि संघ की सहमतमिलि जाएगी? संघ की सहमतनिहीं मलिती, तो शायद वाजपेयी भी पाकस्तिान नहीं जाते मोदी, नवाज शरीफ केसाथ मलि कर आतंकवाद केवरिुद्ध साझा अभयिान छेड़ें, या सरक्रीकववािद को सुलझाएं, इसकी संभावना तो बनती है

पाकस्तिान केप्रतमिोदी क्यों नरम हो सकते हैं, इसकेलि 2011 का उदाहरण दयिा जा सकता है तब कराची उद्योग-वाणज्यि संघ ने गुजरात केवकिास से प्रभावति होकर मोदी को पाकस्तिान आमंत्रति कयिा था, ताकि वे वहां केकारोबारी अगुआओं को संबोधति करें कराची उद्योग-वाणज्यि संघ ने कराची-अमदाबाद केबीच सीधी उान की मांग मोदी से की थी उस समय मुख्यमंत्री मोदी, पाकस्तिान केलि इतना पधिल चुकेथे कि सधि केदूसरे इलाकों में जारी वद्युित संकट केसमाधान केलि खंभात की खाी में बनी कल्पासार परयिोजना और गुजरात सौर ऊर्जा जैसी योजनाएं बनाने में मदद की पेशकश कर दी थी क्या कमुख्यमंत्री को ऐसी बातचीत केलि केंद्र की सहमतकि जरूरत नहीं थी?

मोदी ने उस मथिक को तो□ा है कि □क मुख्यमंत्री को उसके प्रदेश तक महदूद रहना चाहि□□ वदिशी मामलों के वशि्लेषक मानते हैं कि अगर मोदी प्रधानमंत्री बनते हैं, तो शायद राज्यों को बाहर के देशों से संबंध ब□ाने के लि□ वशिेष अधकिार मलिें□ लेकनि क्या राज्यों के मुख्यमंत्री इतने मजबूत हो जा□ंगे कि ममता बनर्जी की तरह बांग्लादेश से तीस्ता समझौता न होने दें, या फरि जयललिता की तरह हो जा□ं, जनिका हर कदम श्रीलंका के वरिुद्ध हो?

वदिश नीत कि कई रणनीतकिारों का मानना है कि प्रधानमंत्री पद के लि□ वैश्वकि दृष्टि वाला व्यक्त होना चाहि□, जसिका अखलि भारतीय कद हो□ लेकनि ऐसा कहते समय वे यह भूल जाते हैं कि इस देश में चार ऐसे प्रधानमंत्री हु□ हैं, जो मुख्यमंत्री पद को सुशोभति कर चुके थे□ पांचवें प्रधानमंत्री चौधरी चरण सहि और सातवें प्रधानमंत्री वीपी सहि उत्तर प्रदेश, नौवें प्रधानमंत्री पीवी नरसहि राव आंध्र प्रदेश के और ग्यारहवें प्रधानमंत्री □चडी देवगौ□ा कर्नाटक के मुख्यमंत्री रह चुके थे□

क्या भारतीय कूटनीत डिोनाल्ड रम्सफेल्ड के चर्चति फकिरे 'ज्ञात-अज्ञात' (नोन-अननोन) के आधार पर चल रही है? यह सवाल पूर्व वदिश सचवि ललति मान सहि ने वशि्व मामलों की भारतीय परषिद के मंच से उठाया है□ उन्होंने कहा कि जो ज्ञात है, वह यह कि चुनाव बाद देश में □क गठबंधन सरकार होगी, जसिके मुखयिा या तो मोदी होंगे, या राहुल गांधी□ और जो अज्ञात है, वह यह कि □क अपरंपरागत सरकार (मैवरकि गवर्नमेंट) होगी, या मैवरकि पी□म होगा□ ललति मान सहि खुल कर नहीं कहना चाहते थे कि भावी मोदी सरकार की वदिश नीत िनागपुर से तय हुआ करेगी, या ब□े उद्योग घरानों के नरि्देश पर 'गुंजायमान भारत' (वाइब्रेंट इंडयिा) का मार्ग प्रशस्त होगा□

देवयानी खोबराग□े प्रकरण में अमेरकिा का वरिोध, क्रीमयिा पर रूस का समर्थन और श्रीलंका में मानवाधकिार हनन की बाहरी देशों द्वारा जांच के प्रस्ताव का वरिोध कर भारत ने □क मजबूत वदिश नीत का परचिय दयिा है□ लेकनि वशि्वास नहीं होता कि यही मनमोहन सहि, ममता बनर्जी के दबाव में तीस्ता समझौता न कर, अपनी कमजोरी दुनयिा को दखिा ग□□ जबकि □चडी देवगौ□ा ने □क अल्पमत सरकार के प्रधानमंत्री रहते बांग्लादेश से गंगा जल समझौता कयिा था□ आठ माह के शासन वाले चंद्रशेखर ने इराक युद्ध के दौरान अमेरकिी युद्धक वमिानों को मुंबई में तेल भरने की अनुमत दी थी□ इसके उलट, भारतीय सैनकिों के सरि काटने की घटना पर हम बेबस थे□ सीमा पर फायरगि, श्रीलंका, मालदीव से छत्तीस के आंक□े, चीनी घुसपैठ, हमारे मछुआरों को मारने वाले इतालवी नौसैनकिों के वरिुद्ध कानूनी कार्यवाही की लाचारी, हमारी वदिश नीत कि कमजोर नसें हैं□

नेहरू ने भले ही भारतीय वदिश नीत कि बुनयिाद रखी थी, लेकनि इंदरिा गांधी के आते-आते पंचशील की पहचान बदल चुकी थी□ अटल बहिारी वाजपेयी के जमाने में वदिश नीत में बदलाव का दूसरा दौर आरंभ हुआ□ वाजपेयी ऐसे पहले नेता थे, जनि्होंने वदिशमंत्री रहते संयुक्त राष्ट्र महासभा में हदिी में अभभिाषण कयिा था□ मनमोहन सहि आर्थकि राजनय को वसि्तार देते रहे और पीवी नरसहि राव की पूरब की ओर देखो नीत कि ब□ाते रहे□ क्या यूपी□-□क से यूपी□-दो तक के शासन में हमारा वदिश मंत्रालय व्यापार-प्रोत्साहन परषिद के रूप में परवरि्तति हो गया है?

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने केलि क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta